International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

शिक्षक एवं शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 : एक परिचय

Bala Devi
981/A, Dev Colony, Rohtak (HR). INDIA

ABSTRACT :

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा,2005 भारत की स्कूली शिक्षा के सन्दर्भ में शिक्षकों, शिक्षक-शिक्षकों एवं शिक्षा के काम से जुड़े अन्य व्यक्तियों के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इस दस्तावेज को बनाने में देशभर के शिक्षाविद् तथा अन्य व्यक्ति लगभग दो वर्ष तक चली लम्बी प्रक्रिया में शामिल थे। भारत में अभी तक सिर्फ तीन राष्ट्रीय पाठ्यचर्या दस्तावेज बने हैं। पहला 1988 का है, दूसरा 2000 और तीसरा 2005 का है। इससे पहले के दस्तावेजों को आप औपचारिक रूप से राष्ट्रीय दस्तावेज नहीं कह सकते क्योंकि उस वक्त शिक्षा, राज्य सूची का विषय थी। उन्हें एक सलाहकार दस्तावेज के रूप में जरूर प्रस्तुत किया जाता था लेकिन वे शिक्षा नीति के तहत नहीं थे। औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यचर्या या पाठ्यक्रम (करिकुलम) विद्यालय या विश्वविद्यालय में प्रदान किये जाने वाले पाठ्यक्रमों और उनकी सामग्री को कहते हैं। पाठ्यक्रम निर्देशात्मक होता है एवं अधिक सामान्य सिलेबस पर आधारित होता है जो केवल यह निर्दिष्ट करता है कि एक विशिष्ट ग्रेड या मानक प्राप्त करने के लिए किन विषयों को किस स्तर तक समझना आवश्यक है।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

KEYWORDS : राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा, पाठ्यचर्या , पाठ्यक्रम।

ऐतिहासिक संकल्पना

1918 में इस विषय पर प्रकाशित प्रथम पुस्तक द करिकुलम में जॉन फ्रेंकलिन बौबिट ने कहा कि एक विचार के रूप में पाठ्यक्रम की जड़ें रेस-कोर्स के लिए लैटिन शब्द में है और पाठ्यक्रम का वर्णन ऐसे कार्यों एवं अनुभवों के रूप में किया है जिनके माध्यम से बच्चे अपेक्षित वयस्क के रूप में विकसित होते हैं ताकि वयस्क समाज में सफलता प्राप्त की जा सके। इसके अलावा, पाठ्यक्रम में केवल विद्यालय में होने वाले अनुभव ही नहीं बल्कि विद्यालय एवं उसके बाहर होने वाले गठन कार्य एवं अनुभव अपनी संपूर्णता में समाहित होते हैं; वे अनुभव जो अनियोजित और अनिर्दिष्ट रहे हैं और वे अनुभव भी जिन्हें समाज के वयस्क सदस्यों के उद्देश्यपूर्ण गठन की दिशा में जानबूझकर कर प्रदान किया गया है।

बौबिट के लिए पाठ्यक्रम एक सामाजिक इंजीनियरिंग का क्षेत्र है। उनके सांस्कृतिक अनुमान एवं सामाजिक परिभाषाओं के अनुसार उनके पाठ्यक्रम निर्माण के दो उल्लेखनीय लक्षण हैं:

(i) वैज्ञानिक विशेषज्ञ अपने इस विशेष ज्ञान के आधार पर कि समाज के वयस्क सदस्यों में क्या गुण होने चाहिए एवं कौन से अनुभव ऐसे गुण उत्पन्न करेंगे, वे पाठ्यक्रमों का निर्माण करने हेतु योग्य होंगे तथा यही न्यायसंगत भी होगा और

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

(ii) पाठ्यक्रम को ऐसे कार्य-अनुभवों के रूप में परिभाषित है जो छात्र को अपेक्षित वयस्क बनने के लिए उसके पास होने चाहिए। इसलिए, उन्होंने पाठ्यक्रम को लोगों के चरित्र का निर्माण करने वाले कार्यों एवं अनुभवों की ठोस वास्तविकता के स्थान पर एक आदर्श के रूप में परिभाषित किया है।

वर्तमान संकल्पना

भारत में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ) का निर्माण करने की जिम्मेदारी एनसीईआरटी की है। यह संस्था समय-समय पर इसकी समीक्षा भी करती है। एनसीएफ-2005 के बनने का कार्य एनसीईआरटी के तत्कालीन निदेशक प्रो. कृष्ण कुमार के नेतृत्व में संपन्न हुआ।

इसमें शिक्षा को बाल केंद्रित बनाने, रटंत प्रणाली से निजात पाने, परीक्षा में सुधार करने और जेंडर, जाति, धर्म आदि आधारों पर होने वाले भेदभाव को समाप्त करने की बात कही गई है। शोध आधारित दस्तावेज़ तैयार करने के लिए 21 राष्ट्रीय फोकस समूह बने जो विभिन्न विषयों पर केंद्रित थे। इसके नेतृत्व की जिम्मेदारी संबंधित क्षेत्र के विषय विशेषज्ञों को दी गई।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा का वर्गीकरण :

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा को 5 भागों में बॉटकर वर्णित किया गया है

(i) परिप्रेक्ष्य

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

(ii) सीखना और ज्ञान

(iii) पाठ्यचर्या के क्षेत्र, स्कूल की अवस्थाएं और आंकलन

(iv) विद्यालय तथा कक्षा का वातावरण

(v) व्यवस्थागत सुधार

परिप्रेक्ष्य

- शिक्षा बिना बोझ के सूझ आधार पर पाठ्यचर्या का बोझ कम करना।
- पढाई को रंटत प्रणाली से मुक्त रखते हुए स्कूली ज्ञान को बाहरी जीवन से जोड़ा जाना।
- पाठ्यक्रम का इस प्रकार संवर्द्धन किया जाना जिससे बच्चों का चहुमुंखी विकास हो।
- ऐसे नागरिक का निर्माण करना, जौ लैंगिक न्याय, मूल्यों, लोकतांत्रिक व्यवहारों, अनुसूचित-जनजातियों, और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति संवेदनशील हों।
- ऐसे नागरिक वर्ग का निर्माण करना जिनमें राजनीतिक एवं आर्थिक प्रक्रियाओं में भाग लेने की क्षमता हो।

सीखना और ज्ञान

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

- समाज में मिलने वाली अनौपचारिक शिक्षा, विद्यार्थी में अपना ज्ञान सृजित करने की स्वाभाविक क्षमता को विकसित करती है।
- बाल केन्द्रित शिक्षा का अर्थ है बच्चों के अनुभवों, उनके स्वारों और उनकी सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता देना।
- संज्ञान का अर्थ है कर्म है कर्म व भाषा के माध्यम से स्वंय और दुनिया को समझना।
- विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र, विभिन्न मुद्दों पर उनके राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, तथा नैतिक पहुओं के संदर्भ में आलोचनात्मक चिंतन का अवसर प्रदान करना।
- अवलोकन, अन्वेषण, विश्लेषणात्मक विमर्श तथा ज्ञान की विषय-वस्तु विद्यार्थियों की सहभागिता के प्रमुख क्षेत्र।

पाठ्यचर्या के क्षेत्र, स्कूल की अवस्थाएं और आंकलन

- बहुभाषिता एक ऐसा संसाधन है जिसकी तुलना सामाजिक तथा राष्ट्रीय स्तर पर किसी अन्य राष्ट्रीय संसाधन से की जा सकती है।
- प्रत्यक्षीकरण तथा तिरूपण जैसे कौशलों के विकास मे गणित बहुत सहायक सिद्ध हुई है।
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण अंतर्गत् एक ऐसी पाठ्यचर्या का होना आवश्यक है, जो शिक्षार्थियों में समाज के प्रति आलोचनात्मक समझ का विकास कर सके।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

- आकलन का मुख्य प्रयोजन सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं एवं सामग्री में सुधार लाना तथा उन लक्ष्यों पर पुनर्विचार करना है जो स्कूल के विभिन्न चरणें के लिए तैयार किए जाते हैं।
- पूर्व प्राथमिक स्तर पर आकलन बच्चों की दैनिक गतिविधियों, स्वास्थ्य और शारीरिक विकास पर आधारित होना चाहिए।

विद्यालय तथा कक्षा का वातावरण

- चेतन और अचेतन दोनों रूप से बच्चे हमेसा विद्यालय के भौतिक वातावरण से निरंतर अन्तःक्रिया करते रहते हैं।
- कक्षा का आकार शिक्षण अधिगम क्रिया को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। किसी भी अवस्था में शिक्षक तथा शिक्षार्थियों का अनुपाता 1ः30 से अधिक नहीं होना चाहिए।
- अनुशासन ऐसा होना चाहिए जो कार्य सम्पन्न होने में मदद करे साथ ही बच्चों की सक्षमता को बढ़ाए।

व्यवस्थागत सुधार

- बच्चों की शिक्षा व्यवस्था में विकासात्मक मानकों का प्रयोग किया जाना चाहिए, जो अभिप्रेरणा तथा क्षमता की समग्र वृद्धि की पूर्व मान्यता पर आधारित हो।
- पाठ्यचर्या को इस प्रकार निर्मित करना चाहिए जिसमें शिक्षक शिक्षार्थियों को खेलते तथा काम करे हुए प्रत्यक्ष रूप से अवलोकित कर सके।
- काम केन्द्रित शिक्षा का अर्थ है बच्चों में उनके परिवेश, प्राकृतिक संसाधनों, तथा जीविका से संबंधित ज्ञान आधारों, सामाजिक अर्न्तदृष्टियों तथा कौशलोें को विद्यालयी व्यवस्थामें उनकी गरिमा और मजबूती के स्त्रोतों में बदलना।

उपसंहार

एन.सी.एफ. की सिफारिश है कि पाठ्यक्रम के बोझ को सुसंगत बनाया जाना चाहिए और विषय के ढेर सारे पहलुओं को सतही ढंग से पढ़ा देने की प्रवृत्ति से बचना चाहिए। एन.सी.एफ. की दृष्टि से शिक्षकों के सशक्तीकरण और परीक्षा- व्यवस्था में सुधारों के द्वारा ही विज्ञान के पढ़ाने और पढ़ने में बुनियादी बदलाव लाया जा सकता है। इस सन्दर्भ में, यह दस्तावेज, अभी प्रचलित नाना प्रकार की प्रवेश परीक्षाओं के स्थान पर, एक राष्ट्रीय परीक्षा सेवा की बात करता है। एन.सी.एफ. की एक अत्यन्त रोचक सिफारिश है कि विज्ञान सम्बन्धी गतिविधियों का बाल विज्ञान सम्मेलन की तर्ज पर विस्तार किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय स्तर पर बड़े विज्ञान तथा तकनीकी मेलों का आयोजन किया जाना

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

चाहिए। इनमें कस्बे, जिले और राज्य स्तर पर आयोजित ऐसे छोटे मेलों से भेजी गई प्रविष्टियाँ शामिल हों।

एन.सी.एफ. इस तथ्य से परिचित है कि सभी बच्चे बड़े होकर वैज्ञानिक या तकनीकी विशेषज्ञ नहीं बनते। परन्तु वर्तमान समाज के सामाजिक, राजनैतिक और नीतिगत मुद्दों को बेहतर ढंग से समझने के लिए सभी का 'वैज्ञानिक दृष्टि से साक्षर' होना आवश्यक है। यह दस्तावेज विद्यार्थियों में विज्ञान, तकनीक और समाज के परस्पर सम्बन्ध की समझ विकसित करने के महत्व को भी स्वीकार करता है, ताकि वे एक ओर पर्यावरण और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनें, और दूसरी ओर संसार के कर्मक्षेत्र में प्रवेश करने के लिए उपयुक्त व्यावहारिक ज्ञान तथा कौशल हासिल कर सकें।

KEYWORDS :

(i) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 क्या कहती है: एक नजर में : डॉ.राजेन्द्र सिंघवी

(ii) https://hi.wikipedia.org/wiki/पाठ्यचर्या

(iii) शिक्षा का लक्ष्यः क्या कहता है एनसीएफ-2005? : वृजेश सिंह

(iv) शिक्षक एवं शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए विशेष : राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005